भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(7), जुलाई 2026, पृ. 632-639
DOI: 10.56042/ijtk.v25i7.27200

विश्ववल्लभ में वर्णित कृषि जैव-निर्माणों में प्रयुक्त अवयवों की एक विश्लेषणात्मक समीक्षा

गुडूरु कौटिल्य[क,*], जी.नागा यशस्वी[ख], एस.वेणुगोपालन[क] एवं एस भद्रिनाथ[क]
[क]प्राच्य अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग, शास्त्र (SASTRA) डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय, तंजावुर, तमिलनाडु 613 401, भारत
[ख]भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की, रुड़की, उत्तराखण्ड 247 667, भारत
[*]ई-मेल: gudurukoutilya@gmail.com

प्राप्त 21 जनवरी 2026; संशोधित 16 जून 2026; स्वीकार 03 जुलाई 2026

यह शोध-पत्र १६वीं शताब्दी के 'विश्ववल्लभ' नामक प्राचीन ग्रंथ में वर्णित भारतीय पारंपरिक कृषि और जैव-निर्माणों की विधियों की समीक्षा करता है। इसमें प्राचीन काल के उन प्राकृतिक निर्माणों पर विशेष बल दिया गया है, जिनका उपयोग पौधों की वृद्धि, मृदा स्वास्थ्य और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने के लिए किया जाता था। ग्रंथ में उल्लिखित जैव-निर्माणों को पादप-व्युत्पन्न पदार्थों जैसे पत्तियों के रस और जड़ों के लेप, पशु-उत्पादों जैसे गोबर, दूध, घी, तथा अनाज जैसे जौ, दालें और बीज अथवा फल आदि की सहायता से तैयार किया जाता था। 'विश्ववल्लभ' व्यवस्थित रूप से इन जैव-निर्माणों के उपयोग को मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और फसल विकास के साथ जोड़ता है। इसमें दूध-जल, प्रियंगु भस्म, चावल का मांड, कुणपजल, कुलथी का जल, उड़द का घोल, वायविडंग, शहद, तिल, घी और गुड़ जैसे अवयवों के विशिष्ट संयोजनों का उल्लेख है। हाल के अध्ययन भी पौधों पर इनके सकारात्मक प्रभावों की पुष्टि करते हैं, जैसे दूध का खनिज तत्व वृद्धि में सहायक है, चावल का मांड मृदा के सूक्ष्म जीवों को बढ़ाता है, और कुणपजल फलों की उपज को बढ़ाता है। यद्यपिग्रंथ में वर्णित कई अवयवों का वैज्ञानिक अन्वेषण शेष है, यह शोध-पत्र इन पारंपरिक जैव-निर्माणों के जैव-रासायनिक गुणों और कृषि संबंधी प्रभावों के व्यवस्थित अध्ययन पर जोर देता है। इसका उद्देश्य इन पारंपरिक जैव-तैयारियों को समकालीन टिकाऊ कृषि प्रणालियों में एकीकृत करना है, ताकि मृदा, जैव-विविधता तथा मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कृषि-रसायनों के स्थान पर इनका उपयोग किया जा सके।

मुख्य शब्द: भारतीय पारंपरिक कृषि, जैव-निर्माण, गोबर, पौधों की वृद्धि, मृदास्वास्थ्य, वायविडंग, विश्ववल्लभ।